भारतीय लोक कला (Indian Folk Art)

भारत में चार तरह की संस्कृति पल्लवित होती रही है:-

- अरण्यक आदिवासी संस्कृति
- मैदानी भाग की कृषि संस्कृति
- पर्वत श्रृखंलाओं की संस्कृति और
- निश्चित संस्कृति।

इन सभी सांस्कृतिक क्षेत्रों में लोककला का भरपूर विकास हुआ है। प्रागैतिहासिक चित्रकला में रूप संयोजन के साथ जीवन के समावेश का भी बाहुल्य मिलता है। आदिम अवस्था में मनुष्य अपने सौंदर्यपरक क्रियाकलाप को जीवन के अन्य कार्यों से अलग नहीं रखता था। कला उसकी जीवन प्रक्रिया का अभिन्न अंग थी। गुफाओं की छतों और दिवारों पर आदिमानव के बनाए अनेक चित्र मिलते हैं। अनेक पहाड़ियों, आखेट, पशुपालन तथा अन्य जीव आकृतियां ,पशु-पक्षी, मानवकृतियां, युद्ध, धनुधारी, अश्वारोही, हस्तारोही, नावयात्रा, नाचगान और देव अराधना के चित्र मिलते हैं। ये चित्र तत्कालीन संस्कृति और कला को प्रकट करते हैं। सभ्यता के विकास के साथ हड़प्पा संस्कृति आते-आते दैनिक प्रयोग के वस्तुओं, पात्रों, मृदभांडो, एवं मुद्राओं पर भी चित्रों का अंकन मिलने लगा। अधिकांश वर्तनों पर ज्यामितीय चित्रण मिलता है। साथ ही कुछ पर पशु-पक्षियों वृक्षों, फुल-पतियों के चित्र भी मिलते हैं। मुद्राओं पर विभिन्न-विभिन्न पशु के चित्र मिलते हैं। धर्म उत्सव पुजा पाठ से संबंधित चित्र भी मिलते हैं।

लोक कला का अर्थ (Meaning of Art)

लोकमन अथवा जन जीवन की अभिव्यक्ति ही लोक कला है। लोक कलाएं प्रदर्शनकारी लोक धार्मिकता से जुड़ी होती है। ये गांव कस्बों आदिवासी क्षेत्रों में खुब प्रचलित है। साधारण शब्दों में कहाँ जा सकता है कि जन साधारण में परम्परागत रीति से स्थानीय सामग्री के द्वारा देशी औजारों की सहायता से अपने खुद के हाथों से जो जो सुंदर सौंदर्य पूर्ण वस्तुएं तथा सामग्रीयां प्रयोग के लिए बनाई है। उन सबका समावेश लोक कला में होता है।

शैलेन्द्र नाथ डे के अनुसार लोक कला जन समान्य विशेषतः ग्रामीण जनों की सामूहिक अनुभूति की अभिव्यक्ति है। **प्रो० विजय कुलश्रेष्ठ** लोक कला में सभी कलाओं को समिल्लित मानते हैं। जिसमें परम्परागत अहंचैतन्य का भाव एक लोक मानसिकता के तत्व निहित होते हैं। जो उसे कला से लोक कला बनाते हैं। लोक कला की जननी आदिम कला अपनी आदिम अवस्था में जब मानव खेती करने लगा उसकी कला में स्थिरता आयी उसी समय लोक भावना उदय हुआ। बहुत समय तक आदिम कला और लोक कला साथ साथ विकसित होती रही लोक कला की उत्पति के कुछ विशिष्ट आधार हैं।

1. धार्मिक भावनाएं
2. अंधविश्वास
3. भय निवारण
4. अलंकरण प्रवृति और जातिगत भावनाओं की रक्षा

लोक कला की विशेषताएं (Characteristics of Folk Art)

लोक कला की विशेषताओं का वर्णन करने से पूर्व यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि लोक कला में लोक चित्र कला का विशिष्ट और प्रमुख स्थान है जो अनेक विशेषताओं से युक्त है।

1. लोक कला का निर्माण लोकोप्रयोग के लिए होता है।
2. लोक कला सरल और सादगी पूर्ण होती है।
3. लोक कला में कुछ अस्पष्टता भी दिखाई देती है। क्योकि यह उपरी सुझ-बुझ तथा सहज उपलब्ध सामग्रीयों से निर्मित होती है।
4. लोक कला पर स्थानीय कारकों और तत्वों का प्रभाव होता है इसलिए अलग-अलग क्षेत्रों की लोक कला में भिन्नता पाई जाती है।
5. भारतीय जाति व्यवस्था के कारण स्थानीय लोक-कलाएं अपने कुटुम्बों में परम्परा अनुसार आज तक सुरक्षित है।
6. लोक कला के विकास की गति बहुत धीमी होती है।
7. लोक कला धर्म तथा अलौकिक भावनाओं और अंधविश्वासों से बहुत अधिक प्रभावित है।
8. लोक कला के मुख्य तीन उद्देश्य हैं। अनुष्ठातमिक, अलंकारिक और कौशलार्थ।
9. लोक कला में चित्रांकन एवं रंग योजना उत्पन्न सरल और सुक्ष्म होती है।
10. लोक कला धार्मिक, सामाजिक, अध्यात्मिक और आर्थिक सभी पहलुओं की समृद्धि के लिए चित्रित की जाती है।

लोक कला के कुछ उदाहरण (Some Examples of Folk Art)

- उतर भारत में गोवर्धन पूजा के लिए गोवर्धन की गोबर की मूर्ति बनाना
- उतरांचल में कार्तिक मास में शिव एवं उनके परिवारों की मूर्तियां बनाना।
- बंगाल में उत्सव एंव पूजा के समय महिलाओं के द्वारा अंगुलियों से सुंदर अल्पना बनाना।
- बिहार के मधुबनी चित्र लोक कला के उदाहरण हैं।
- उतर प्रदेश में चौका पूरना, सांझी, करवाचौथ एवं अहोई के अवसर पर भिती में चित्रांकन।

Raju Kumar
Guest Faculty
Woman's Training College
Mob No.- rajumanjay@gmail.com
B.Ed 1st Year
EPC – 2 (Drama Art and Education)
Topic:- भारतीय लोक कला (Indian Folk Art)